

भास्कर खास

गूगल के सीईओ सुंदर ने एक अखबार को दिए इंटरव्यू में जिम्मेदारी, चुनौती और भारत पर कीं बातें

सुंदर पिचाई बोले- हर दिन सोचता हूं कि कोई इंजीनियर कुछ नया रच रहा होगा...शायद बेहतर भी... हम रुक गए तो पिछड़ जाएंगे

कैलिफोर्निया | गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई का कहना है कि जो जितने बड़े स्तर पर है, वो उतने ही दबाव में है। ये बात दुनिया के हर इंसान या संस्थान पर लागू होती है। 23 लाख सर्च प्रति सेकंड की दर से गूगल दुनिया का सबसे बड़ा सर्च इंजन है। लिहाजा सीईओ पर जिम्मेदारी भी बड़ी रहती है। हमें हर दिन कुछ नया रचना है। सुंदर ने एक अखबार को दिए इंटरव्यू में ये बातें कहीं। उन्होंने सफलता, जिम्मेदारी, चुनौती और भारत पर भी बातें कीं। खास अंश...



सुंदर पिचाई

उम्मीद है कि एक दिन भारत लौटूंगा और अपने देश को कुछ दे सकूंगा

• जिम्मेदारी पर पिचाई बोले... सफलता के साथ जिम्मेदारियां भी आती हैं। हर दिन मैं ये सोचता हूं कि सिलिकन वैली के

किसी गैराज में कोई इंजीनियर कुछ नया रच रहा होगा। शायद बेहतर भी। हम रुक गए तो पिछड़ जाएंगे। हमें रोज कुछ नया करना होगा। इसके लिए जरूरी है कि ऐसा सिस्टम तैयार हो, जिसमें आपके पास अच्छी टीम हो और सब मिलकर काम करें। किसी एक इंसान को सुपरस्टार बना देने वाला कल्चर लंबे समय तक टिक नहीं पाता।

• फ्यूचर टेक्नोलॉजी और चुनौती पर... भविष्य के हिसाब से खुद को तैयार करते रहना बहुत बड़ी चुनौती है। हमें अब मोबाइल टेक्नोलॉजी से आगे सोचना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में सोचना होगा। यही फ्यूचर टेक्नोलॉजी है। जब हम भविष्य के बारे में सोचते हैं तो ये भी ध्यान रखना होता है कि आखिर इंसान किस रफ्तार से खुद को बदलना चाह रहा है। हमें उसी रफ्तार से नई चीजें उन्हें देनी हैं।

• वर्क अप्रोच पर...

कल से बेहतर काम आज करना है। हमें ये देखना होगा कि कौन सी वो जरूरी बातें हैं, जिनसे हम सहमत हो सकते हैं। इस लिहाज से हमें खुद के लिए पैरामीटर तय करना ही सबसे बड़ा काम है।

• टेक्नोलॉजी और जेनरेशन गैप पर...

सिलिकन वैली में कई लोग ऐसे हैं, जिन्होंने वीडियो गेम्स खेलते हुए ही हाईस्कूल पास किया और ऐसे ही बड़े हुए। ये पीढ़ी एक नई दुनिया से जुड़ी है। टेक्नोलॉजी की दुनिया। पुरानी पीढ़ी को भी ये बात समझनी होगी। विजुअल इन्फॉर्मेशन का जमाना है। इससे जुड़कर ही हमें आगे बढ़ना पड़ेगा।

• भारत से जुड़ाव पर...

चेन्नई और आईआईटी खड़गपुर की याद अब तक दिल में है। मुझे अब भी याद है कि बचपन में जिस दिन मेरे घर में फ्रिज आया, उसी दिन से मां की मेहनत आधी हो गई। मैं ऐसी जगह से आया हूं जहां से मैंने बदलाव को करीब से देखा है। टेक्नोलॉजी के बिना जीवन और इसके आने पर हुए बदलाव को मैंने नजदीक से महसूस किया है। उम्मीद है कि एक दिन भारत जरूर लौटूंगा। और तब देश को कुछ वापस दे सकूंगा।